अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या कथन

5.3 शोध के उद्देश्य

5.4 शोध की परिसीमाएँ

5.5 शोध के चर

5.6 शोध की परिसीमाएँ

5.7 न्यादर्श

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण

5.9 प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

5.10 शोध निष्कर्ष

5.11 सुझाव

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय पंचम

शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना –

इस अध्याय में लघुशोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिए गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष एवं भविष्य में किये जाने वाले अध्ययन संबंधी सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

5.2 समस्या कथन –

''कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

5.3 शोध के उद्देश्य –

1. विद्यार्थियों का चिन्ता स्तर ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता तथा शैक्षिके उपलब्धि में संबंध का अध्ययन करना।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्ता स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता की तुलना करना।
7. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

5.4 शोध परिकल्पनाएँ –

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्ता स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 शोध के चर –

प्रस्तुत अध्ययन के शोध चर निम्नलिखित है।

1. स्वतंत्र चर – शैक्षिक चिन्ता
   लिंग (छात्र एवं छात्राएं)
   क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण)
2. आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

5.6 शोध की परिसीमाएँ –

प्रस्तुत शोध की सीमाएँ निम्नलिखित है।

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल पन्ढरपुर तहशील के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र तक सीमित है।

2. प्रस्तुत अध्ययन प्रारंभिक स्तर तक ही सीमित है।

3. प्रस्तुत अध्ययन केवल छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि तक ही सीमित है।

4. प्रस्तुत अध्ययन केवल 106 प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है। जिनमें 54 ग्रामीण एवं 52 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी है।

5.7 न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन में महाराष्ट्र राज्य के सोलापुर जिले के पन्ढरपुर तहसील के एक शहरी एवं एक ग्रामीण स्कूल को लिया गया है। न्यादर्श को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया है।

इस शोधकार्य के लिए 2 स्कूल से कुल 106 विद्यार्थियों को लिया गया है। जिसमें 52 छात्र एवं 54 छात्राएं शामिल है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्न स्कूल का चयन –

1. यशवन्त विद्यालय, पन्ढरपुर जिला–सोलापुर।
2. श्रीमंतराव काले विद्यालय, जैनवाड़ी तहसील पन्ढरपुर, जिला–सोलापुर।

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण –

अनुसंधान में नवीन तथ्य संकलित करने हेतु अथवा नवीन क्षेत्र का उपयोग करने हेतु परीक्षणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रों को उपकरण कहते हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं का ध्यान रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. शैक्षिक चिन्ता मापनी :–

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता के लिए डॉ. ए.के. सिन्हा एवं डॉ. ए. सेन गुप्ता की शैक्षिक चिन्ता मापनी का प्रयोग किया गया जो 13 से 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए है। इस परीक्षण में 20 प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के लिए दो विकल्प है जिसमें 'हाँ' एवं 'नहीं' का विकल्प है। हाँ के लिए 1 अंक व नहीं के लिए 0 अंक निर्धारित किया गया है। परीक्षण के अंकों के निर्धारण के आधार पर शैक्षिक चिन्ता को तीन वर्गो में बांटा गया है।

1. उच्च शैक्षिक चिन्ता
2. मध्यम शैक्षिक चिन्ता
3. निम्न शैक्षिक चिन्ता

इन्हीं तीनों वर्ग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता का पता लगाया है।

2. शैक्षिक उपलब्धि –

शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों की कक्षा आठवीं के लिए कक्षा सातवीं के बोर्ड परीक्षा के प्रतिशत अंको को लिया गया है।

5.9 प्रयुक्त सांख्यकी विधि –

संग्रहित प्रदत्तों को संगठित तथा वर्गीकृत करने के पश्चात् आकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता, छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी' टेस्ट का प्रयोग किया गया।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि, छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी' टेस्ट का प्रयोग किया गया।

विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह-संबंध का अध्ययन हेतु पियर्सन की गुणन-आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है।

विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्ता स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

5.10 शोध निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोधकार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध है।
2. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्ता स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

5.11 सुझाव –

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता कम करने के लिए विद्यालय में परामर्शकर्ता होना चाहिए।

2. राष्ट्रीय पाठ्चर्या 2005 में शिक्षा बिना बोझ की (Learning without Burden) के बारे में कहा गया है। ऐसी शिक्षा विद्यालय में देनी चाहिए। विद्यालय में शिक्षा बिना बोझ की देने से विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता कम हो जाएगी। ऐसा करने से विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि बढ़ जाएगी।
3. विद्यालय में श्रेणी विधि (Grading System) होनी चाहिए।
4. विद्यार्थियों की चिन्ता कम करने के लिए शिक्षकों प्रशिक्षण देना चाहिए। इसके साथ खेल, शारीरिक शिक्षा, ध्यान धारणा का पाठ्यक्रम में समावेश करना चाहिए।
5. पाठ्यक्रम में संगीत, योगा का समावेश करना चाहिए।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव –

भविष्य में शैक्षिक चिन्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित लघुशोध हेतु निम्नलिखित विषय हो सकते हैं।

1. न्यादर्श का आकार बढ़ा करके भविष्य में इस विषय पर शोध कार्य किया जा सकता है।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता को लेकर भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. केन्द्रीय तथा नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह–संबंधात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. सामान्य वर्ग, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक चिन्ता के बारे में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।